

Lobe den Herren, den mächtigen König der Ehren 3/4

Gut spielbar zu EG 316/317 a GL 258 a

Zu den Noten im EG und im GL Kapo.: 5. Bd.

C	G	C	G	F	C	F	G	C	G	C	
-----3-----			-----0-----			-----0-----			-----1-----		
-1---1---0---			-1---3-1---			-0---0---1---			-3---0---1---		
-0---0---			-0---0-0-0---			-0---2---0---			-2---0---0---		
- -2---2- -0-			- -2-----			- -0-3---2---			- -3---0---2-		
-3-----2---			-3-----			- -3---3---3-			- -3-----		
-----			-----			-3-----			-1-----		
-----			-----			-----			-3-----		
1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3			1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3 +		

C	G	C	F	C	F	G	C	G	C	F	G
-3---3---3---			-5-----			-0---1---3---			-3---1-0---		
-1---0---1---			-6-----6---			-1---1---3---			-1---1-1---		
- -0- -0-			- -5---5---			- -0- -2- -0-			- -0-----		
- -0---2---			-7-7---7---			- -3---0---			- -2-----		
-3-----			-3-----			-3-----			- -2---2---		
-----			-----			-----			-3-----		
1 + 2 + 3			1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3 +		

C	G	C	G	C
-----0---			-----	
-1---3---1---			-3-----	
-0---0---			-0-----0---	
- -2- -0-			- -0---0- -2-	
-3---2---3---			- -2---2---	
-----			-3-----	
1 + 2 + 3			1 + 2 + 3 + 1	

Lobe den Herren, den mächtigen König der Ehren 3/4

Gut spielbar zu EG 316/317 b GL 258 b

Zu den Noten im EG und im GL Kapo.: 5. Bd.

C	G	C	G	C	F	G	C	G	C		
-----3-----			-----0-----			-----0-----			-----1-----		
-1---1---0---			-1---3-1---			-0---0---1---			-3---0---1---		
-0---0---			-0---0-0-0---			-0---2---0---			-2---0---0---		
- -2---2- -0-			- -2-----			- -0---0---2-			- -3---0---2-		
-3-----2---			-3-----			- -3---3---3-			- -3-----		
-----			-----			-3-----			-1-----		
-----			-----			-----			-3-----		
1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3			1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3 +		

C	G	C	F	C	C4	G	C	G	C	F	G
-3---3---3---			-5-----			-0---1---3---			-3---1-0---		
-1---0---1---			-6-----6---			-1---1---3---			-1---1-1---		
- -0- -0-			- -5---5---			- -0- -0- -0-			- -0-----		
- -0---2---			-7-7---7---			- -3---2---			- -2-----		
-3-----			-3---3---2---			-3-----			- -2---2---		
-----			-----			-----			-3-----		
1 + 2 + 3			1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3 +			1 + 2 + 3 +		

C	G	C
-----0---		
-1---3---1---		
-0---0---		
- -2- -0-		
-3---3---3---		

1 + 2 + 3		

T: Joachim Neander 1680;
M: 17. Jh.; geistlich Stralsund 1665, Halle 1741
Sätze: Henning Grove 2009